IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्रेमचन्द्र की कथा साहित्य में भारती सामाजिक न्याय परिदृश्य एक अध्ययन

किरण ठाकुर- शोधार्थी

डॉ संध्या बिसेन
विभागाध्यक्ष हिंदी

स्कूल ऑफ़ आर्ट्स एंड सोशल साइंस सरदार पटेल यूनिवर्सिटी बलाघाट

सार

हिन्दी में आधुनिक काल का आगमन 1900 के दशक से माना जाता है। प्रारम्भ में आधुनिक हिन्दी साहित्य जादुई और परियों की कहानियों पर केन्द्रित वा, जो कल्पना से पाठकों का मनोरंजन करता था। धनपत राय श्रीवास्तव के रूप में जन्मे, उन्होंने नवाब राय नाम से एक स्वतंत्र लेखक के रूप में अपना करियर शुरू किया, लेकिन जब उनका काम सोज-ए वतन, लघु कथाओं का एक संवाह ब्रिटिश सरकार द्वारा जब्त कर लिया गया और जला दिया गया, इसके बाद उन्होंने मुंशी प्रेमचंद नाम से हिंदी में लिखना शुरू किया।

प्रेमचंद को आमतौर पर भारत के टॉल्स्टॉय के रूप में जाना जाता है, जिसने हिंदी साहित्य को एक वास्तविकता में आकार दिया। उन्होंने एक उपन्यासकार, कहानीकार और एक नाटककार के रूप में साहित्यिक हशैली पर विजय प्राप्त की और हिंदी आधुनिक साहित्य में उपन्यास सम्राट (उपन्यासों के सम्राट) के रूप में शीर्षक दिया गया। उन्होंने पाठकों के सामने समाज की वास्तविकता का चित्रण कर हिंदी साहित्य जगत को एक नया आयाम दिया। उन्होंने अपने उपन्यास सेवासदन से वर्ष 1917 में हिंदी साहित्य जगत में प्रवेश किया।

परिचय

प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के अग्रणी लेखकों में से एक है। उनसे पहले, उपन्यास विद्या में रोमांटिक वा और यह व्यक्तिगत खाद और जरूरतों को पूरा करता था। प्रेमचंद ने हिन्दी उपन्यास में यवार्थवाद के तत्व का परिचय दिया। वह लेखन की व्यक्तिवादी विचा के विरोधी है और उस तरह के साहित्य के पक्षधर है जो व्यक्तियों में रचनात्मकता की भावना का संचार करने में सक्षम है।

वह जीवन के प्रति मानवीय दृष्टिकोण में विश्वास करता है। उनके लिए साहित्य तभी पूर्ण और सार्थक होता है जब वह व्यक्ति को व्यक्तिगत परिसरों और विश्वासों से मुक्त करने में सक्षम हो। यह एक व्यक्ति को एक विशिष्ट संवेदनशीलता विकसित करने में सक्षम बनाता है जो रचनात्मक आवेग के साथ आम को सामंजस्य स्थापित करने में सक्षम है।

उन्होंने 17 उपन्यास और 300 से अधिक लघु कथाएँ लिखी है, जो उनके समय में समाज में प्रचलित सामाजिक मुद्दों को चित्रित करती है। उन्होंने सामंती व्यवस्था, जमींदारी व्यवस्था, गरीबी, सांप्रदायिकता, जाति व्यवस्था और समाज में प्रचलित सामाजिक और आर्थिक स्थितियों के खिलाफ

आवाज उठाई। उन्होंने समाज में महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव का भी जिक्र किया। उन्होंने दहेज प्रवा, विधवा विवाह के खिलाफ लड़ाई लड़ी और कहा कि महिलाओं को बाहर आना होगा और अपने ऊपर दिखाए गए सामाजिक बुराइयों और भेदभाव के खिलाफ अपनी भावनाओं को व्यक्त करना होगा।

उन्होंने अपने आसपास के जीवन पर लिखा और पाठकों को अपने आसपास की सामाजिक संरचना से अवगत कराया। उन्होंने अपने काम में आम आदमी को उनके सामने आने वाली समस्याओं का चित्रण करके उन्हें नायक और नायिकाओं का दर्जा देकर चित्रित किया। इस प्रकार वह हमारे सामने वास्तविक भारत प्रस्तुत करता है।

गीतांजलि पांडे ने अपनी पुस्तक बिटवीन टू वर्ल्ड्स लिटरेचर को हमारे जीवन की आलोचना और विश्लेषण करना चाहिए, में साहित्य पर प्रेमचंद के विचार व्यक्त किए हैं। जो साहित्य समाज की बागडोर नहीं चलाता, उस पर धर्म का नियंत्रण वा आज साहित्य ने अपनी जगह बना ली है और उसका साधन सौन्दर्य के

प्रति प्रेम है। दलित, पीड़ित और वंचित उनकी सुरक्षा और हम में सच्ची ताकत और दृढ़ संकल्प हमारे वर्तमान समय में हमारे लिए बेकार है। पहले के युग में वकालत साहित्य का कर्तव्य है।

मुंशी प्रेमचंद न केवल सामाजिक संदर्भ और परिवेश में एक व्यक्ति के अस्तित्व और मूल्य को स्वीकार करते हैं, बल्कि वे यवार्थवादी चित्रण और समस्याओं के विश्लेषण में भी विश्वास करते हैं। एक लेखक के रूप में उनका उद्देश्य समाज की बेहतरी है। इस अर्थ में प्रेमचंद का सामाजिक यवार्थवाद अपने युग के किसी भी अन्य लेखक की तुलना में अधिक सकारात्मक और प्रगतिशील है।

लेखन के व्यक्तिवादी और मनोविश्लेषणात्मक तरीकों में, चेतन और अवचेतन तत्वों की अभिव्यक्ति लेखकों का मुख्य उद्देश्य है। लेकिन जहां तक मानव चेतना के विकास का संबंध है, सामाजिक और सामूहिक परिस्थितियों का अपना महत्वपूर्ण योगदान है। उपन्यासकार अपने लेखन में सामाजिक परिप्रेक्ष्य का अनुसरण करते हुए व्यक्ति और समाज के कल्याण के बारे में भी अधिक स्पष्ट और प्रभावी बंग से कल्पना करते हैं। जीवन के प्रति यह दृष्टिकोण उनके लेखन में परिलक्षित होता है जो उनकी कला को अधिक अभिव्यंजक और सत्य बनाता है।

भारत के अग्रणी आधुनिक हिंदी लेखक प्रेमचंद एक कुशल कहानीकार है। मानवीय स्थिति के संबंध में उनकी वास्तविक चिंताएँ थीं। वह अपने चारों और मूर्खता, पाखंड और अनावश्यक अमानवीयता देख सकता था। लेकिन नकारात्मक न होते हुए, यह दृढ़ विश्वास रखते हुए कि हम सभी आखिरकार इंसान है. उन्होंने खूबसूरती से छूने वाली कहानियों को बुना, जिसमें विभिन्न विषयों पर कब्जा कर लिया, चाहे वह बच्चे की कोमलता हो, पैसे का पाखंड हो, दोस्ती की सुंदरता हो और मुक्ति मार्ग की कहानी हो।

वह वास्तव में हम में से प्रत्येक में रहने वाली गहरी मानवता को प्रस्तुत करता है। सामग्री और साहित्यिक शैली के संदर्भ में इस कहानी का गहरा सौंदर्य महत्व है। कहानी की सामग्री वास्तविक जीवन की घटनाओं से ली गई है जिसे सभी पहचान सकते हैं और फिर भी जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, प्रेमचंद इसे एक गहरा महत्व देते हैं और इस तरह से कथानक और विषय को उत्कृष्ट तरीके से जोड़ते है। यह आधुनिक और यवार्थवादी है और फिर भी पाठक को मनुष्य के भाईचारे के गहन संदेश से प्रभावित करता है। भाषा की गणना सरल होने के लिए की जाती है और यह दिल तोड़ने वाले चरमोत्कर्ष की ओर ले जाती है।

संवाद आवश्यक चुनिंदा शब्दों और स्थानीय में रोजमर्रा के संवाद है लेकिन अर्थ स्थानीय, ठोस से परे है और सार्वभौमिक को सामने लाता है और इस प्रकार स्थान और समय से परे है। यह कहानी लेखन अपने चरम पर है। एक और गहरा बिंदु यह है कि जिस तरह से लैस की तरह फोकस एक छोटी कहानी के कम समय और स्थान में मौजूद होता है। यह लघु कथा भी अपने सर्वश्रेष्ठ रूप में है।

प्रेमचंद जी के उपन्यासों में समाज दर्शन

लघु कथाएँ सीमित नहीं है वास्तव में प्रारूप की बहुत ही संक्षिप्तता लेखक को एक गंभीर बिंदु बनाने के लिए चुनौती देती है, और केवल एक बिंदु, जो पाठक को गहराई से प्रभावित करता है। कोई इस बात पर बहस नहीं करेगा कि प्रेमचंद ऐसा करने में सफल हो जाता है। पाठक जो वास्तव में कहानी में उतरता है. वह अपने जीवन को रूपांतरित होने के लिए पाता है और कहानी एक संवेदनशील पाठक के लिए उवल-पुथल हो सकती है।

प्रेमचंद ने अपने उपन्यास निर्मला (1927) में दहेज प्रथा और बेमेल विवाह जैसी सामाजिक बुराइयों को उजागर किया है जिसमें युवती हमेशा पीड़ित होती है। वास्तव में, यह उपन्यास निर्मला नाम की एक युवा लड़की की दयनीय कहानी है, जिसकी शादी एक वृद्ध विधुर से हुई है और उसके कई बच्चे है। पति द्वारा बेवफाई के शक में उसे काफी मानसिक प्रताड़ना से गुजरना पड़ता है। उपन्यास की कार्रवाई तीन परिवारों के इर्द-गिर्द घूमती है। निर्मला नाम का केंद्रीय चरित्र इन परिवारों के बीच की सामान्य कड़ी है।

उपन्यास रंगभूमि (1925) कामीण गरीबी, जातिगत भेदभाव, अस्पृश्यता और स्वतंत्रता पूर्व भारत की पृष्ठभूमि में अमीरों और वंचितों के बीच तनाव सहित सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों की एक विस्तृत श्रृंखला को दर्शाता है। औद्योगीकरण की प्रतिक्रिया काफी स्पष्ट है। उद्योगपति को अपने व्यावसायिक हितों के प्रति जुनूनी और जुनूनी के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, वह बिना किसी शर्म के वफादारी को बदल देगा। एक उद्योगपति प्रभु सेवक स्पष्ट रूप से घोषणा करते हैं कि यदि नरभक्षी नहीं है तो व्यवसाय कुछ भी नहीं है। मनुष्य को पशु के रूप में देखना और उसके साथ पशु की तरह व्यवहार करना व्यापार जगत का आदर्श वाक्य है। कोई व्यक्ति तब तक व्यवसायी नहीं बन सकता जब तक कि वह अपने साथी मनुष्यों के प्रति क्रूर न हो। इस प्रकार,

उपन्यासकार भारतीय गांवों में सदियों पुरानी सामाजिक परंपराओं और नए ब्रिटिश साम्राज्यवाद की लहर के बीच संघर्ष को चित्रित करता है।

प्रेमचंद का सबसे प्रमुख उपन्यास कर्मभूमि (1932) जो राष्ट्रीय आंदोलन की पृष्ठभूमि में लिखा गया था, उनके समकालीन काल की कई सामाजिक बुराइयों को चित्रित करता है जैसे कि नशा और अशिक्षा के उपयोग से मंदिरों में प्रवेश के लिए असूत प्रतिबंध, भूमि विवाद, जमींदारों का अत्याचार और गांधीजी के नेतृत्व में युवाओं में राष्ट्रवादी ताकतें।

समस्याएं और सामाजिक दायित्व व्यक्तियों से संबंधित हैं और प्रेमचंद व्यक्ति के महत्व को नकारते नहीं है। उनका कहना है कि मनुष्य की समस्याओं का समाधान समाज के भीतर ही पाया जा सकता है। मनुष्य समाज का अभिन्न अंग है और वह तभी सुरक्षित है जब समाज स्थिर हो। प्रेमचंद व्यक्ति का मूल्यांकन सामाजिक दृष्टि से करते हैं। उनके चरित्र सदियों पुरानी मान्यताओं और सामाजिक प्रतिमानों द्वारा शासित होते हैं, और उनमें पहल और गतिशीलता का अभाव होता है। वे शाऊल बोलो, कैमस, सार्व और बेकेट के अस्तित्वगत पात्रों की तरह व्यवहार नहीं करते हैं। व्यक्ति की व्यक्तिगत समस्याएं गौण है और वे सामाजिक दायित्वों और धार्मिक विचारों के बारे में चिंतित होने के बजाय अधिक चिंतित है।

पिल्लई के चेम्मीन, अनयमूर्ति के संस्कार में इस तरह के पात्र मिलते हैं। एक लेखक के रूप में प्रेमचंद एक चरित्र का उतना ही गहन विश्लेषण प्रदान करते हैं जो समाज की बेहतरी के लिए आवश्यक है। सामाजिक व्यवस्था पर व्यक्ति की आकांक्षाओं और जुजून का प्रभुत्व उसे स्वीकार्य नहीं है। उनकी लघु कथाओं और उपन्यासों में एक जिम्मेदारी वाले पात्र है। उनका मुख्य उद्देश्य उन प्रवृत्तिर्यो को प्रोत्साहित करना है जो एक स्वस्व समाज के विकास को बढ़ावा दे सकती है।

प्रेमचंद मैथ्यू अर्नोल्ड से सहमत प्रतीत होते हैं जब वे साहित्य को जीवन की आलोचना मानते हैं, और जीवन को समाज के संबंध में जीना और समझना पड़ता है। वह सामाजिक पर्यावरण को मानव नियति को आकार देने वाला सबसे महत्वपूर्ण कारक मानते हैं। एक लेखक के रूप में, वह जीवन के बाहरी पक्ष और उसके बाफिक विवरण में अधिक रुचि रखते है। वह संकीर्ण सोच वाले व्यक्तिवाद के खिलाफ है। मानव व्यवहार के मूल्यांकन और विश्लेषण के लिए उनका मानदंड एक सामूहिक सामाजिक प्रयास है।

प्रेमचंद के अनुसार मानव व्यवहार और चरित्र को उसके सामाजिक संदर्भ में आंकना होता है। एक सच्चे मानवतावादी के रूप में, प्रेमचंद का मानना है कि समाज के खिलाफ हर कार्य पाप है। मनुष्य को उन कारकों को बढ़ावा देना चाहिए जो मानव सुख और कल्याण में योगदान करते हैं। सामाजिक प्रतिबद्धता और लेखन के उद्देश्य में उनके विश्वास के मूल में सुधार और प्रगतिशील परिवर्तन के लिए उनका क्रांतिकारी उत्साह निहित है। अपने उपन्यास गोदान में, उन्होंने प्रचलित सामाजिक बुराइयों और प्रवाओं पर हमला किया। वह क्रांति के बजाय सामाजिक परिवर्तन और सुधारों के पक्षधर है। उनके सभी उपन्यास सामाजिक परिवर्तन के लिए उनके उत्साह को दशति है, और सामाजिक बुराइयों जैसे गरीब किसानों का शोषण, वेश्यावृत्ति, बाल विवाह और विधवाओं की समस्याएं उनके अध्ययन और आलोचना के विषय है। उनका युग राजनीतिक उथल-पुथल और तेजी से सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों का युग था, जिसने प्रेमचंद की प्रतिभा के उद्भव और फूल को देखा।

इस प्रकार यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मुंशी प्रेमचंद के सभी उपन्यास सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक बुराइयों जैसे गरीब किसानों का शोषण, वेश्यावृत्ति, बाल विवाह, विश्ववाओं की समस्याओं के अध्ययन और आलोचना के लिए उनके उत्साह को दशति है। उनका युग राजनीतिक उथल-पुथल और तेजी से सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों का युग वा, जिसने प्रेमचंद की प्रतिभा का उदय और फूल देखा। जब प्रेमचंद ने लिखना शुरू किया, तो वे प्रचलित सामाजिक और राजनीतिक अशांति से असंतुष्ट थे। एक लेखक के रूप में उनका उद्देश्य समाज को रहने के लिए एक बेहतर जगह बनाना वा। इसलिए उन्होंने सामाजिक मुद्दों और सामाजिक नैतिकता पर एक नए प्रकाश में, समकालीन समाज के लिए नई चर्चा की। इस प्रकार प्रेमचंद अपने समय के प्रतिनिधि लेखक बने हुए हैं।

संदर्भ

1. रजनी। महिला अधिकार और प्रेमचंद के गोदान में भूमिकाएं एक साहित्यिक विश्लेषण, जर्नल ऑफ साउथ एशियन लिटरेचर, वॉल्यूम 21, नंबर 22. प्रेमचंद समर पर निबंध, 2017 में गिरावट। 57-64

2. पांडे, गीतांजलि। कितना समान ? प्रेमचंद के लेखन में महिलाएं। आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, 2016.2183-21871

3. घोष, विजया । प्रेमचंद की दुनिया। पुस्तक समीक्षा अभिलेखागार से। द गुड बुक्स ट्रस्ट, 20121

4. शर्मा, कृति मुंशी प्रेमचंद द्वारा। रिसर्च स्कॉलर (एज इंटरनेशनल रेफरीड ई जर्नल ऑफ लिटरेरी एक्सप्लोरेशन)। वॉल्यूम । अगस्त 2014.339-3441

5. बलवार, जगदीश लाल। प्रेमचंद के कार्यों में लोकप्रिय संस्कृति का प्रतिनिधित्व। मुंशी प्रेमचंद द्वारा सामाजिक वैज्ञानिक, खंड और यादव। रिसर्च स्कॉलर (एन इंटरनेशनल रेफटीड ई जर्नल ऑफ लिटरेरी एक्सप्लोरेशन)। वॉल्यूम । अगस्त 20141

6. बत्रा प्रोमिला। चार्ल्स ठिकैंस और प्रेमचंद सामाजिक उद्देश्य वाले उपन्यासकार। दिल्ली चमन ऑफसेट प्रेस, 2011.प्रिंट

7. नागेंद्र, डॉ. प्रेमचंद। एक एंवोलॉजी। दिल्ली बंसल एंड कंपनी, 2011. प्रिंट।

8. पांडे गीतांजलि। दो दुनियाओं के बीच प्रेमचंद की एक बौद्धिक जीवजी। नई दिल्ली मनोहर पब्लिशर्स, 2016. प्रिंट।